विचार बिन्दु

जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई देता वैसे ही दुष्ट को सौजन्य दिखाई नहीं देता। –स्वामी भजनानंद

बड़ा सवाल कि क्या सोशल मीडिया से लोकतंत्र मजबूत होता है!

ऑनलाइन युग में लोकतंत्र के बारे में लोग सामान्यत: दो तरीकों से सोचते हैं। एक तो यह कि इंटरनेट तकनीक मुक्त करती है जिससे वैश्विक लोकतंत्र के नये युग की शुरूआत होती है। दूसरे ठीक इसके विपरीत सोचते हैं। उनका मानना है कि या तो आप सोशल मीडिया को अपना लो या लोकतंत्र को चुन लो। दोनों एक साथ नहीं हो सकते। दो तरह के सोच में कौन अधिक सही है यह सवाल बड़ा जटिल है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वर्तमान में दुनिया भर में लोकतंत्र कमजोर होता या सिकुड़ता नज़र आ रहा है। दुनिया के स्थिर माने जाने वाले लोकतंत्रों में भी अब उसकी मजबूती पर सवाल खड़े किए जाने लगे हैं। यह भी सच है कि मौजूदा दौर में सोशल मीडिया एक ताकतवर राजनैतिक औजार के रूप में स्थापित हो रहा है और राजनीतिक दल तथा राजनेता नये डिजिटल युग में सोशल मीडिया को अपनी सोच के समर्थकों को एकजुट करने तथा विरोधियों की छवि को नीचे गिराने के लिये धनघोर प्रचार का जरिया बना रहे हैं। अपने बढ़ते वर्चस्व के कारण सोशल मीडिया अकादमिक अध्ययन का विषय भी बन गया है। विश्वविद्यालयों में यह एक अलग विषय के रूप में स्थापित होने लगा है और छात्रों को इसके उपयोग के लिये शिक्षित और प्रशिक्षित भी किया जाने लगा है ताकि प्रचार तंत्र में छात्रों के लिये रोजगार के नये अवसर खुल सके। सोशल मीडिया ने बाज़ार के उत्पादों के ब्रांड लोकप्रिय बनाने और उनके लिये नये ग्राहक तैयार करने तथा कंपनियों के शेयर धारकों का विश्वास जीतने जरिया बनने के साथ ही अब राजनीति को भी बाज़ार के ब्रांड के रूप में तब्दील कर दिया है जिसमें विमर्श का स्थान आभासी युद्ध ने ले लिया है जिसके परिणाम भौतिक जगत में पाने की आशा बलवती हो रही है।

इन्हीं हालात और नये ज़माने में लोकतान्त्रिक प्रक्रिया में उसकी भूमिका को समझने के लिए कुछ विशेषज्ञों ने हाल ही में सोशल मीडिया की एक महत्वपूर्ण एवं व्यवस्थित समीक्षा की है। इसके लिये उन्होंने जिन साक्ष्यों के संकेतकों को चुना वे थे:– जनता की राजनीतिक भागीदारी, उसका ज्ञान, विश्वास, समाचारों का एक्सपोज़र, राजनीतिक अभिव्यक्ति, नफरत, ध्रुवीकरण, लोकलुभावनवाद, नेटवर्क का ढांचा, और झूठी सूचनाएं। अध्ययनकर्ताओं ने दुनिया भर के देशों में विभिन्न डिजिटल सोशल प्लेटफार्मों पर हो चुके लगभग 500 अध्ययनों की समीक्षा की। इसमें उन्हें कुछ व्यापक पैटर्न उभरते हुए नज़र आये। उन्होंने पाया कि सोशल मीडिया के उपयोग से आम लोगों का राजनीतिक जुड़ाव तो बढ़ा है, लेकिन साथ ही उनमें ध्रुवीकरण और लोकतान्त्रिक संस्थानों में अविश्वास की प्रवत्ति में भी वृद्धि हुई है। इस अध्ययन में राजनैतिक लोकलुभावनवाद भी रेखांकित हुआ। विशेषज्ञों ने सोशल मीडिया और लोकतंत्र के बीच केवल सहसंबंधों को जानने की बजाय सोशल मीडिया और लोकतांत्रिक बेहतरी के संकेतकों के बीच कारणात्मक संबंधों का पता लगाने वाले अनुसंधान पर अधिक बल दिया। उनका मानना था कि सोशल मीडिया और लोकतंत्र के सहसंबंध दिलचस्प हो सकते हैं, लेकिन वे यह साबित नहीं कर सकते कि कोई परिणाम सोशल मीडिया के उपयोग के कारण ही निकला है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि हम सोशल मीडिया के उपयोग और अभद्र भाषा के बीच एक संबंध पाते हैं तो वह इसलिये भी हो सकता है कि अभद्र भाषा का प्रयोग करने वाले लोग सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करते हों, बजाय इसके कि सोशल मीडिया का उपयोग अभद्र भाषा को बढ़ावा देता है।

सोशल मीडिया और लोकतंत्र के बीच कारणात्मक संबंध कई तरीकों से स्थापित किये जा सकते हैं, जैसे बड़े पैमाने पर उनके उपयोगों से। एक सर्वे में प्रतिभागियों को फेसबुक के उपयोग को प्रति दिन 20 मिनट तक कम करने या एक महीने के लिए फेसबुक को पूरी तरह से बंद करने के लिए कहा गया तो पाया गया कि दोनों ही मामलों में लोकतंत्र की बेहतरी में वृद्धि हुई और फेसबुक से पूरी तरह दूरी होने से भी राजनीतिक ध्रुवीकरण में काफी कमी आई। हालांकि समीक्षकों ने जिन अध्ययन आलेखों पर विचार किया, उनमें इन दोनों में कारणात्मक की बजाय सह-संबंध जानने वाले अधिक थे, फिर भी उन्होंने उनमें सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का मिश्रण पाया। जैसा कि अक्सर विज्ञान में होता है, पैटर्न जटिल होता है लेकिन फिर भी उसकी व्याख्या की जा सकती है। सकारात्मक पक्ष पर, उन्होंने पाया कि डिजिटल मीडिया का उपयोग राजनीतिक जुड़ाव को बढ़ाने और सूचनाओं के प्रसार में अधिक विविधता ला सकता है। उदाहरण के लिए, ताइवान में एक अध्ययन में पाया गया कि सूचना-उन्मुख सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि करता है। हालांकि, यह तभी सच था जब उपयोगकर्ता का मानना हो कि कोई व्यक्ति ऑनलाइन माध्यम से राजनीति को प्रभावित कर सकता है। दूसरी तरफ नकारात्मक पक्ष में समीक्षकों को ध्रुवीकरण और लोकलुभावनवाद को बढ़ावा देने और संस्थानों में विश्वास कम करने वाले जैसे प्रभावों के लिए काफी सबूत मिले। लोकतान्त्रिक संस्थानों और मीडिया पर लोगों के भरोसे पर पड़े प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट थे। महामारी के दौरान, डिजिटल मीडिया के उपयोग का कोविड से बचाव के टीके लगवाने में संकोच का संबंध भी नज़र आया।

जन संचार की उच्च शिक्षा के संस्थान जो सोशल मीडिया को नये विषय के रूप में पढ़ाने लगे हैं उनके पीछे लोकतंत्र की बेहतरी की बजाय बाज़ार की ताकतों के हाथों में खेलने वाले वैतनिक डिजिटल मजदूर तैयार करने का ही ध्येय नज़र आता है।

अध्ययन में राजनीतिक संदर्भों की श्रंखला में सोशल मीडिया के उपयोग का एक और नकारात्मक परिणाम यह पाया गया कि विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों पर, राजनीतिक ध्रुवीकरण में बढ़ावा लाने वाला रुख प्रतीत होता है। पाया गया कि बढ़ा हुआ ध्रुवीकरण किसी के सोशल मीडिया में विरोधी दृष्टिकोण के संपर्क में आने से भी जुड़ा था। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक विरोधियों के तर्क के संपर्क में आने से राजनीतिक विभाजन को पाटने में मदद नहीं मिली। बल्कि वह इसे बढ़ावा देता ही लगा। उन्हें सोशल मीडिया के उपयोग और लोकलुभावनवाद के बीच एक मजबूत और व्यापक संबंध भी मिला। अधिक सोशल मीडिया का उपयोग लोकलुभावन पार्टियों के लिए अधिक वोट दिलाता हुआ पाया गया। ऑस्ट्रिया, स्वीडन और ऑस्ट्रेलिया में किए गए अध्ययनों में सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग और ऑनलाइन दक्षिणपंथी कट्टरता के बीच संबंध के प्रमाण मिले। जर्मनी और रूस में किए गए अध्ययनों में कारणात्मक साक्ष्य मिले कि डिजिटल मीडिया जातीय घृणा वाले अपराधों की घटनाओं को बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी के एक अध्ययन में पाया गया कि फेसबुक के स्थानीय तौर पर बाधित होने, जैसे तकनीकी दोषों या इंटरनेट रुकावटों, के कारणों ने उन स्थानों पर हिंसा को कम किया। अध्ययनकर्ताओं का अनुमान है कि सोशल मीडिया पर यदि शरणार्थी विरोधी भावना 50 प्रतिशत कम होती है तो उससे हिंसक घटनाएं 12.6 प्रतिशत घट जाती है। दुनिया भर में सोशल मीडिया के प्रभावों का वितरण रेखांकित करने लायक था। दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में उभरते लोकतंत्रों में राजनीतिक भागीदारी और सूचना खपत पर सकारात्मक प्रभाव सबसे अधिक स्पष्ट थे जबकि स्थापित लोकतंत्रों जैसे यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में नकारात्मक प्रभाव अधिक स्पष्ट थे।

इसलिए, जहां से हमने शुरुआत की थी, वहां लौटें: क्या इंटरनेट एक मुक्तिदाता तकनीक है? या सोशल मीडिया लोकतंत्र के साथ असंगत हैं? अब तक इसका कोई सरल हां या ना में उत्तर नहीं है। हालांकि, इस बात के प्रमाण हैं कि डिजिटल मीडिया विश्व स्तर पर राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करता है। यह साक्ष्य लोकतंत्र पर सोशल मीडिया के प्रतिकूल प्रभावों के बारे में चिंता का विषय जरूर है। फेसबुक, ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया अपने आप में लोकतंत्र के साथ असंगत नहीं हैं। हालांकि, लोकतांत्रिक बेहतरी के लिए आवश्यक है कि वैज्ञानिक सोशल मीडिया के सामाजिक प्रभावों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। उन प्रभावों का मूल्यांकन और नियमन मतदाताओं और निर्वाचित नीति निर्माताओं द्वारा किया जाना समीचीन है। मगर ऐसा नहीं हो रहा है। ऐसे अध्ययनों का उपयोग अधिकतर बाज़ार की शक्तियों द्वारा किया जाता है। कुछ देशों में इस दिशा में छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कदम जरूर दिख रहे हैं। यूरोपीय संघ का डिजिटल सेवा अधिनियम इनमें से एक है। दूसरा अमेरिका में प्रस्तावित प्लेटफ़ॉर्म जवाबदेही और पारदर्शिता अधिनियम है, हालांकि इसका भाग्य अभी अनिश्चित है। भारत में हमारे उच्च शिक्षा के तथा अन्य अकादमिक संस्थानों में भी ऐसे अध्ययन होते हैं मगर वे गंभीर अध्ययन नहीं कहे जा सकते। वे अधिकतर शोधकर्ता की नियोजन में योग्यता के लिये जरूरी दस्तावेजों की संख्या बढ़ाने वाले ही अधिक होते हैं। जन संचार की उच्च शिक्षा के संस्थान जो सोशल मीडिया को नये विषय के रूप में पढ़ाने लगे हैं उनके पीछे लोकतंत्र की बेहतरी की बजाय बाज़ार की ताकतों के हाथों में खेलने वाले वैतनिक डिजिटल मजदूर तैयार करने का ही ध्येय नज़र आता है। वैसे लोकतंत्र में जन-भागीदारी का महत्व व्यापक रूप से जाना जाता है और और सर्वत्र इसे स्वीकार भी किया जाता है। इसके बावजूद हमें लोकतान्त्रिक व्यवस्था में नागरिकों की समुचित भागीदारी देखने को नहीं मिलती। हमारे देश में, सरकार के कई स्तरों पर नागरिकों की भागीदारी की व्यवस्थाएं हैं। फिर भी हम पाते हैं कि एक तरफ भागीदारी तो सभी चाहते हैं परंतु दूसरी तरफ वास्तविक भागीदारी राजनीति के धुरंधर कुछ चतुर सुजान ही कर पाते हैं। उनकी यह भागीदारी सर्वजनहिताय न होकर उनकी अपनी और उनके अपनों की हो कर रह जाती है। वे नई डिजिटल तकनीक के सर्वव्यापी हो रहे माध्यम सोशल मीडिया का उपयोग अपना प्रभाव जमाने के लिये करते हैं। और रोजगार पाने के लिये डिजिटल तकनीक के उपयोग का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवा उनके प्रयासों को परवान चढ़ने के लिये अपनी सेवाएं देने को तत्पर रहते हों तो क्या आश्चर्य है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

सर्दी और बुखार होने पर सता रहा है करोना का डर

चीन में एक बार फिर कोरोना ने कोहराम मचा दिया है। इससे समूचा विश्व चिंतित हो उठा है। चीन में कोरोना से मरने वालों की तादाद बढ़ती जा रही है। भारत ने भी सुरक्षात्मक कदम उठाने शुरू कर दिए है।

सरकार ने एडवाइजरी जारी कर मास्क के साथ दो गज की दूरी की सलाह दे दी है। हालाँकि भारत में बड़ी संख्या में वैक्सीन लगने के बाद खतरा कम हो गया है फिर भी सावधानी जरूरी है। मौसम में बदलाव के कारण सर्दी, खांसी, जुकाम व बुखार जैसी बीमारियां लोगों को परेशान कर रही हैं। वायरल बुखार की समस्या होने पर कुछ सावधानियों को बरता जाए तो यह चार से छह दिन में अपने आप ठीक हो जाएगा, लेकिन इन-दिनों कोरोना का भी लोगों को डर सताने लगा है। मौसम में हो रहे बदलाव के कारण कफ, कोल्ड, फीवर, गले में खराश, खांसी, सिर में दर्द आदि समस्याएं होना एक आम बात है, लेकिन यह वायरल समस्याएं कोरोना वायरस संक्रमण के लक्षण नहीं हैं।

देश इस समय सर्दी और शीत लहर की चपेट में है। घर-घर में सर्दी और जुकाम का प्रकोप देखा जा सकता है। ऐसे में लोगों के समक्ष यह दुविधा उत्पन्न हो जाती है की आखिर करोना को कैसे पहचाने। कुछ लोग सर्दी के साथ बुखार की चपेट में आने से घबराये हुए है।

कोरोना वायरस की सबसे खतरनाक बात ये है कि इसके लक्षण आम सर्दी-जुकाम या कॉमन एलर्जी से इतने मिलते-जुलते है। विशेषज्ञों के अनुसार कॉमन एलर्जी में इंसान को खांसी जुकाम जरूर होते हैं, लेकिन उसे बुखार नहीं चढ़ता जबकि कोरोना पीड़ित में तेज बुखार की शिकायत देखी गई है। दूसरा, कोरोना वायरस के रोगियों में बदन दर्द और जोड़ों में दर्द की समस्या देखी गई है। जबकि आम सर्दी-जुकाम में बदन टूटा-टूटा रहता है, लेकिन उसमें तेज दर्द की शिकायत नहीं होती है।

कोरोना संकट में प्रकृति और ऋषि मुनियों द्वारा अपनायी जाने वाली देशी चिकित्सा ने हमारा ध्यान खिंचा है। कोरोना में सर्दी, जुकाम, खांसी, गले में खराश आम बात है। दादी नानी

बाल मुकुन्द ओझा

- **हल्दी वाला दूध हो या नमक मिले गरम पानी के गरारे करोना के जुकाम और गले दर्द में दोनों ही कारगर इलाज है**

के नुस्खों ने इनका उपचार भी हमें बताया है। ये नुस्खे इतने ज्यादा कारगर हैं कि डॉक्टर और मेडिकल साइंस भी उन्हें मानने से मना नहीं करते हैं। हल्दी वाला दूध हो या नमक मिले गरम पानी के गरारे कोरोना के जुकाम और गले दर्द में दोनों ही कारगर इलाज है। अदरक को पानी में उबालकर और फिर शहद के साथ खाया जाए तो यह कफ, गले में खराश और गला खराब होने की दिक्कत से छुटकारा दिला सकती है।

अदरक को शहद के साथ खाने से गले में होने वाली सूजन और जलन में भी राहत मिलती है। इसी भांति अजवायन, लोंग, काली मिर्च, तुलसी, गिलोय, मुलेठीयुक्त पान, शहद, दालचीनी आदि के नुस्खे भी संजीवनी साबित हुए है। उल्टा लेटकर ऑक्सीजन प्राप्त करने के नुस्खे को एलोपेथी की मान्यता मिली है। इन नुस्खों से लाखो लोग कोरोना के प्रारंभिक लक्षणों से बाहर निकलने में कामयाब हुए है, इनमें से ज्यादातर नुस्खों का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। सचमुच प्रकृति, पर्यावरण और आयुर्वेद का अद्भुत संगम है। मानव जीवन के लिए तीनों कारकों के एकाकार होने की आज के समय महती जरूरत है। इससे प्रकृति को जहाँ साफ-सुथरा रखा जा सकता है वहां पर्यावरण भी हमारे अनुकूल होगा जिससे आयुर्वेद को भी संरक्षित रखा जा सकेगा। जो मनुष्य प्रकृति के जितना अधिक अनुकूल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से वह व्यक्ति उतना ही अधिक निरापद एवं व्याधियों के आक्रमण से दूर होगा। मौजूदा वक्त में विभिन्न देशों के छात्र आयुर्वेद और पारंपरिक दवाओं का अध्ययन करने के लिए भारत आ रहे हैं। यह दुनिया भर में लोक कल्याण के बारे में सोचने का सबसे माकूल वक्त है।

आयुर्वेद पूरे शरीर को सुरक्षित रखता है। आयुर्वेद भारत की संस्कृति और प्रकृति से जुड़ा हुआ है। आयुर्वेद और योग भारत द्वारा पूरे मानव समाज और पृथ्वी को दिया अनमोल उपहार है।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

देश में सरसों उत्पादन में राजस्थान अग्रणी प्रदेश

वैर, (निसं) । राजस्थान किसान कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष बृजेन्द्र चौधरी जटवलाई ने राजस्थान को सरसों प्रदेश घोषित करने की मांग की है तथा प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया है।

ज्ञापन में उल्लेख किया है कि भारत देश में एक तरफ गेहूं व चावल से गोदाम भरे हुए हैं तो दूसरी ओर

किसान कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष बृजेन्द्र चौधरी

- **गत वर्ष अकेले राजस्थान में लगभग 50 लाख टन सरसों का उत्पादन हुआ**
- **भारत में करीब 70 प्रतिशत खाद्य तेल दूसरे देशों से आयात किया जाता है**

तिलहन के मामले में हम दूसरे देशों पर निर्भर हैं। भारत देश में करीब 70 प्रतिशत खाद्य तेल दूसरे देशों से आयात किया जाता है। जिसमें पाम ऑयल सबसे अधिक होता है। पाम ऑयल के सबसे बड़े उत्पादक इंडोनेशिया और मलेशिया हैं। खाद्य तेलों पर भारत देश का सालाना करीब 70,000 करोड़ रुपये खर्च हो रहा है। यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए ठीक नहीं है। इसलिए सरकार सरसों की खेती को बढ़ावा देवे। खाद्य तेलों में सरसों का करीब 28 प्रतिशत का योगदान है। यह सोयाबीन के बाद दूसरी सबसे महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। पिछले साल भारत में लगभग 111 लाख टन और अकेले राजस्थान में लगभग 50 लाख टन सरसों का उत्पादन हुआ था। देश में राजस्थान सरसों उत्पादन में अग्रणी राज्य है। राजस्थान को सरसों प्रदेश घोषित करने से सरसों उत्पादन में बढ़ोतरी होगी, किसानों की आय बढ़ेगी, लोगों को रोजगार मिलेंगे और खाद्य तेलों पर जो भारत सरकार का खर्चा होता है उसमें कमी आएगी ।

अब सैलानी ले सकेंगे हेलीकॉप्टर जॉयराइड का आनंद

जैसलमेर, (नि.सं.)। देशी-विदेशी सैलानी अब जैसलमेर में हेलीकॉप्टर जॉयराइड का लुत्फ उठा सकेंगे। राजस्थान पर्यटन विकास निगम के तत्वावधान में एवन कम्पनी के माध्यम से सम ढाणी, जैसलमेर से प्रायोगिक तौर पर इस सेवा की शुरुआत की गई है।

अल्पसंख्यक मंत्री सालेह मोहम्मद,विधायक रुपाराम धनदे ने हरी झण्डी दिखाकर एवं फीता

जैसलमेर से हेलीकॉप्टर जॉयराइड की शुरुआत के समय हेलीकॉप्टर में सवार मंत्री सालेह मोहम्मद, जैसलमेर विधायक रुपाराम धनदे, नगर परिषद् सभापति हरिवल्लभ कल्ला, पूर्व प्रधान अमरदीन फकीर।

- **सम से अल्पसंख्यक मंत्री सालेह मोहम्मद, विधायक रुपाराम धनदे ने की सेवा की शुरूआत**

काटकर इस अभिनव पहल का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत, उपखंड अधिकरी जगदीश आशिया, पुलिस उपअधीक्षक प्रियंका कुमावत, नगरपरिषद सभापति हरिवल्लभ कल्ला, पूर्व प्रधान अमरदीन फकीर जैसलमेर में आयोजित समारोह में मौजूद रहे। जबकि पर्यटन राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा एवं आरटीडीसी चेयरमैन धर्मेन्द्र राठौड़ जयपुर में मुख्यमंत्री निवास से वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम में जुड़े। पर्यटन विभाग के अधिकारियों समेत जैसलमेर जिले के अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

मंत्री सालेह मोहम्मद ने इस अवसर पर कहा कि जैसलमेर की पर्यटन क्षेत्र में अलग पहचान है एवं पर्यटकों में जैसलमेर को लेकर अलग ही उत्साह देखने को मिलता है। उन्होंने जैसलमेर से इस सेवा को शुरु किए जाने पर राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया।

शिल्पग्राम उत्सव: मुक्ताकाशी रंगमंच पर नृत्यांगना वनश्री राव ने प्रस्तुति दी

उदयपुर, (कासं)। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से आयोजित दस दिवसीय शिल्पग्राम उत्सव में मंगलवार का दिन हाट बाजार में खरीददारी के नाम रहा तथा शहर के लोगों ने जमकर कलात्मक उत्पाद खरीदे। शाम को मुक्ताकाशी रंगमंच पर देश की जानी मानी नृत्यांगना वनश्री राव व उनके साथियों ने तीन क्लासिकल डांस फॉर्म्स के मिश्रण से पौराणिक ग्रंथों के प्रसंगों को मनोरम अंदाज में दर्शाया। बुधवार को आठवें दिन 'स्वरांजलि' में पद्मभूषण पं. विश्व मोहन भट्ट तथा पद्मश्री अनवर खां लोक और शास्त्रीय सगीत का फ्यूज़न प्रस्तुत करेंगे।

मेला प्रारम्भ होने से देर शाम तक लोग हाट बाजार में खरीददारी करने में मशगूल रहे। शिल्पग्राम परिसर के सभी क्राफ्ट सैगमेन्ट्स लोगों की भीड़ से अटे रहे। शिल्पग्राम में प्रवेश करते ही लोगों ने सीधे हाट बाजार का रूख किया। हाट बाजार में बहुरूपिया कलाकारों ने आगंतुकों का मनोरंजन किया वहीं बंजारा रंगमंच पर कलाकारों की प्रस्तुतियों को लोगों ने निहारा। दिन में बन्नी झोंपड़ी के समीप लंगा कलाकारों के गीतों को सुनने के लिये लोगों की खासी भीड़ रही।

शिल्पग्राम महोत्सव में मुक्ताकाशी रंगमंच पर नृत्यांगना वनश्री राव व उनके साथियों ने मनोरम अंदाज में प्रस्तुति दी ।

शाम को मुक्ताकाशी रंगमंच पर शास्त्रीय नृत्य क्षेत्र में चार दशक से कार्य करने वाली वनश्री राव की प्रस्तुति की शुरूआत 'त्रयंभकम' से हुई जो त्रयंभकम भगवान शिव की त्रिगुणात्मक प्रकृति का एक गीत है। यह प्रस्तुति शिव को इन तीन अवस्थाओं में भक्ति में परिणत होने का वर्णन करती नजर आई। जिसमें शिव और पार्वती अर्जुन को परखने के लिए शिकारी और शिकारी के रूप में आते हैं, इससे पहले कि उन्हें पाशुपत अस्त्र-परम हथियार दिया जाए।

अर्जुन और प्रच्छन्न शिव ने एक ही सूअर को गोली मार दी, और एक भयानक लड़ाई में शामिल हो गए कि कौन खेल जीतता है, जिसके दौरान अर्जुन को पता चलता है कि वह स्वयं भगवान के साथ युद्ध में है।

- **शिल्पग्राम उत्सव में मंगलवार का दिन हाट बाजार में खरीददारी के नाम रहा**
- **हाट बाजार में बहुरूपिया कलाकारों ने आगंतुकों का मनोरंजन किया**

इसके बाद 'अभिमन्यु वध' में जहां अभिनय पक्ष प्रबल बन सका वहीं नर्तकों ने संगीत व लयकारी के साथ बेहतरीन तारतम्य बनाते हुए प्रस्तुति को सशक्त बनाया। प्रस्तुति में कौरवों और पांडवों के बीच कुरुक्षेत्र युद्ध के समापन में चक्रव्यूह में पकडे जाने पर अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु कौरवों द्वारा एक कुटिल साजिश में मारे जाते हैं तथा द्रोणाचार्य द्वारा एक योद्धा की नैतिकता के विरुद्ध युद्ध में ऐसी चालों में उनके गिरने पर विलाप करते करते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप-सी परीक्षा आयोजित

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर द्वारा वरिष्ठ अध्यापक (माध्यमिक शिक्षा) प्रतियोगी परीक्षा 2022 की ग्रुप-सी

- **राजस्थान लोक सेवा आयोग ने पंजाबी विषय की परीक्षा मंगलवार को आयोजित की**

पंजाबी विषय की परीक्षा जोधपुर शहर के 1 परीक्षा केन्द्र पर मंगलवार प्रात: 9 बजे से 11.30 बजे तकआयोजित की गई।

परीक्षा समन्वयक एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर(शहर-प्रथम) डॉ. भास्कर विश्नोई ने बताया कि इसमें जोधपुर जिला मुख्यालय पर ग्रुप - सी में पंजाबी विषय परीक्षा में कुल 100 अभ्यर्थियों में से 21 अभ्यर्थी उपस्थित तथा 79 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। इस परीक्षा के निष्पक्ष एवं सफल सम्पादन के लिए एक सतर्कता दल का गठन किया गया, जिसमें वरिष्ठ आरएएस अधिकारी को सतर्कता दल का प्रभारी एवं आरपीएस अधिकारी, राजस्थान शिक्षा सेवा अधिकारी को सतर्कता दल का सदस्य बनाया गया। पेपर वितरण के लिए एक उप समन्वयक नियुक्त किया गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 28 दिसम्बर, 2022

पौष मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, शतभिक्षा नक्षत्र दिन 12:26 तक, सिद्धि योग दिन 2:20 तक, कौलव करण प्रात: 9:49 तक, चन्द्रमा गुरूवार प्रात: 5:53 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग दिन 12:46 तक है। कुमार योग दिन 12:46 से रात्रि 8:45 तक है। आज अनुरूपा छठ, पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:56 तक, शुभ 11:11 से 12:28 तक, चर 3:03 से 4:20 तक, लाभ 4:20 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:37

मेष

घर-परिवार के खर्चों पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। सम्भावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कर्क

नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार होगा। स्वास्थ्य परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

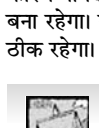

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

धनु

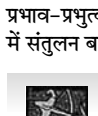

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

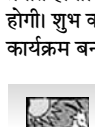

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।